© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 10 | Print ISSN : 2395-6011 | Online ISSN : 2395-602X
Themed Section: Education

नई कहानी में युगबोध

सुनील कुमार
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
एम०एम०एच०कॉलेज,
ग़ाज़ियाबाद, भारत।

हिन्दी कहानी के इतिहास में स्वाधीनता प्राप्ति के आसपास से एक नई बहस शुरू हुई जिसके केंद्र में कुछ अलग ढंग की लिखी गयी कहानियाँ और नए कहानीकार शामिल हुये। इस बहस ने जिस कथा-प्रविधि को विकसित करने का काम किया उसे ही आगे चलकर नई कहानी के रूप में जाना गया। नई कहानी आंदोलन की शुरुआत पश्चिम में चल रहे न्यू स्टोरी आंदोलन से प्रभावित होकर आगे बढ़ी ऐसा भी कई आलोचकों ने स्वीकार किया है। कारण जो भी रहा हो पर इस हकीकत से कोई इंकार नहीं कर सकता कि हिन्दी कहानी का छठा दशक हिन्दी में नई कहानी आंदोलन के नाम से जाना गया। नई कहानी की प्रवृत्तियों को लेकर,इसके युगबोध को लेकर,इसकी संरचना को लेकर और सबसे बढ़कर इसके कथारूप को लेकर हिन्दी आलोचना में पर्याप्त बहसें हुईं। इन बहसों को केन्द्रीयता प्रदान करने वाले आलोचक नामवर सिंह का कहना है कि –" आज की कहानी पर विचार करते समय सबसे पहले मेरे मन में यह सवाल उठता है कि 'नई कविता' की तरह 'नई कहानी' नाम की भी कोई चीज है क्या? और हम पाते हैं कि 'नई कहानी नाम से कोई आंदोलन अभी तक नहीं चला है। इससे क्या समझा जाये? यह कि कहानी में कुछ नयापन आया ही नहीं,कि कहानी में जो नयापन आया है वह कविता की अपेक्षा बहुत कम है ,कि स्वयं कहानी के विकासक्रम में यह नयापन बहुत स्पष्ट नहीं है, कि कविता की तरह कहानी के नयेपन को अलगाने का प्रयत्न ही नहीं हुआ, कि कहानी के क्षेत्र में पुरानी प्रवृत्तियाँ अब कहीं अवशिष्ट नहीं रहीं, जो नई कहानी संज्ञा की आवश्यकता प्रतीत हो"।[1] नई कहानी पर इस तरह के कई गंभीर सवालों से बहस शुरू करने वाले नामवर जी अपने पूरे विश्लेषण में कहानी और नई कहानी के मशया के अंतर को ही स्पष्ट करने में अपनी सारी ऊर्जा लगा देते हैं और अंततः इस न्श्कर्ष पर पहुँचते हैं कि –"आज कहानी की सफलता का अर्थ है उसकी सार्थकता! आज किसी कहानी का शिल्प की दृष्टि से सफल होना ही काफी नहीं है बल्कि वर्तमान वास्तविकता के सम्मुख उसकी सार्थकता भी पारखी जानी चाहिए।

[1] कहानी नई कहानी-नामवर सिंह, पृष्ठ-13, राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली

जीवन के जिन मूल्यों की कसौटी पर हम कविता, उपन्यास आदि साहित्य रूपों की परीक्षा करते हैं,उन्हीं पर कहानी की भी परीक्षा होनी चाहिए। इससे कहानी समीक्षा का एक ढांचा तो तैयार होगा ही साथ-साथ मानवीय मूल्यों के संबंध में हमारा ज्ञान भी बढ़ेगा और और सम्पूर्ण साहित्य के मानों की अपर्याप्तता भी क्रमशः कम होगी"।[2] यहाँ देखने वाली बात यह है कि जहां एक तरफ नामवर जी कहानी के नयेपन को लेकर सशंकित दिखाई देते हैं वहीं दूसरी तरफ नयेपन की कसौटी भी खुद ही तैयार करके रख देते हैं। अन्यत्र भी नामवर जी ने लिखा है कि नई कहानी हिन्दी कहानी से इस मामले में भी अलग है कि जहां नई कहानी से पहले हिन्दी कहानी मनोरंजन के रूप में पढ़ी जाती रही है वहीं नई कहानी के दौर में आकर कहानी ने अपना ढांचा बदल लिया और अब वह सिर्फ मनोरंजन का साधन मात्र नहीं रह गयी उसने भी कविता आदि दूसरी विधाओं की भांति अपना युगबोध कह सकने का साहस विकसित कर लिया। 'नई कहानी की भूमिका' लिखने वाले नई कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर कथाकार कमलेश्वर का कहना है कि –" नई कहानी मेरे लिए आंदोलन नहीं, नए के लिए निरंतर प्रयत्नशील और प्रयोगशील रहने की प्रक्रिया है। प्रयोगशील शब्द काफी भ्रामक हो गया है। इस शब्द ने लेखक की जवाबदेही समाप्त करने की कोशिश की है। मेरे लिए प्रयोगशीलता जवाबदेही से निरपेक्ष नहीं है। जो कुछ मैं लिखता हूँ , उसके लिए अपने को जवाबदेह भी पाता हूँ। इसीलिए कुछ भी अंतिम मान सकना संभव नहीं है। लेखक के रूप में निरंतर प्रतिवाद करते रहने, नए यानी प्रामाणिक (यथार्थ और जीवन-संगत) को रेखांकित करते चलना ही मर प्रतिबद्धता है। सारी उग्रता और बात को साफ साफ कहने की तल्खी के बावजूद अपने को जवाबदेह स्वीकारना ही मैं विनम्रता भी मान पाता हूँ। बात न कहने वालों या, या न कह सकने वालों की विनम्रता झूठी,मन्तव्य-प्रेरित, घटक और विषाक्त होती है"।[3] इसी तरह दूसरे विद्वानों ने भी नई कहानी को लेकर अपना मत व्यक्त किया है। नई कहानी आंदोलन में जिन कथाकारों ने अपना लेखन शुरू किया उनके लेखन के संदर्भ से हम अगर नई कहानी को समझना चाहें तो पाएंगे कि नई कहानी का युगबोध स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत की बन रही सामाजिक-राजनैतिक संरचना का युगबोध है।

हिंदुस्तान के इतिहास में स्वाधीनता प्राप्ति एक ऐसी घटना है जिसने भारत की सामाजिक राजनैतिक संरचना को बहुत हद तक प्रभावित करने का काम किया है। आज़ादी के पहले का भारत और आज़ादी के बाद का भारत पूरी तरह बदला हुआ भारत है। आज़ादी को लेकर हिंदुस्तानी जनता के मन में जो आशा-आकांक्षा और उम्मीद थी उसे आज़ादी के बाद पूरा किया जाएगा इसी उम्मीद में भारत की जनता पूरे मनोयोग से आज़ादी की लड़ाई में देश के साथ खड़ी

[2] वही, पृष्ठ-19
[3] नई कहानी की भूमिका,कमलेश्वर,पृष्ठ-07, राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली।

थी। आज़ादी के बाद कितना कुछ पूरा हुआ कितना अधूरा रहा यह अलग से शोध का विषय है। हाँ, इतना जरूर हुआ कि आज़ादी ने भारतीयों को नये और सर्वथा अलग तरह के देश में सांस लेने की छूट दी। अब तक जो सपना था वह आज हकीकत बन गया। इस हकीकत के आ जाने के बाद उम्मीदों और आशाओं का एक दौर चला लेकिन जल्दी ही यह दौर भी शांत होने लगा। नेहरू युग के तमाम सारे अंतर्विरोध जनता के सामने उभरकर सामने आने लगे। प्रेमचंद ने जिस बाद को 1930 के दशक में ही कह दिया था कि 'जान की जगह गोविंद के बैठ जाने से कुछ भी बदलाव नहीं होने वाला' वही अंततः सही साबित हुआ। देश की जनता के सामने वही पुरानी समस्याएँ,वही गरीबी, भुखमरी, अकाल और अन्न की अनुपलब्धता जैसे मुश्किलें मुह बाए खड़ी दिखीं। हिन्दी कहानी या दूसरी सभी विधाओं को जनता की इन समस्याओं को दर्ज करना एक चुनौती थी। कविता आदि दूसरी विधाओं में इन्हें दर्ज करना ज्यादा आसान था बनिस्बत कहानी के। कहानी में जनता से जुड़े ये मुद्दे सीधे तौर आयें इसके लिए कथाकारों को नई प्रविधि ईजाद करनी थी। एक ऐसी प्रविधि जिसमें युगसत्य स्पष्टता से अपनी जगह बना सके। हिन्दी कहानी ने प्रेमचंद के रूप में ऐसा कथाकार पा लिया था जिसने हिन्दी कहानी की पूरी परिभाषा ही बदलकर रख दी थी लेकिन अब नई स्थिति को व्यक्त करने के लिए प्रेमचंद की कथा प्रविधि भी कई बार जवाब दे जाती थी। नए ढंग के यथार्थ की जटिलता को प्रेमचन्द की शैली में संप्रेषित कर पाना अब संभव नहीं था। इसलिए नए कथाकारों को नए भाव के साथ ही नई शैली भी ईजाद करनी पड़ी। कथाकार और नई कहानी के प्रमुख कथाकार राजेंद्र यादव ने अपनी पुस्तक 'कहानी स्वरूप और संवेदना' में लिखा है –"बदलते जीवन की प्रक्रिया के प्रति इस दृष्टिकोण, अनुभूति और अभिव्यक्ति की प्रामाणिकता के आग्रह ने नई कहानी को आज न तो आज इतना इकहरा रहने दिया है, न कटा-छंटा। स्थिति को उसके जीवन रेशों के साथ उसकी संपूर्णता मेन पकड़ने के आग्रह के कारण आज कहानी ध्वनियों,संकेत, प्रतीकोण और बिंबों के अनेक स्तरों पर एकसाथ चलती है,भाषा को अधिक प्रभावोत्पादक और अर्थगम्भीर बनाती है। घटना या स्थूल परिस्थिति को या तो बहुत लापरवाही से जिक्र भर के लेती है या बहुत ही अमूर्तता के साथ। जीवित मांस के टुकड़े की तरह उसके सिरे और तन्तु अभी-अभी कहीं बड़ी जगह जुड़े होने का एहसास देते हैं, जहां से वह टुकड़ा काटा गया है उसी के साथ और संदर्भ मेन रखकर उसे समझा जा सकता है"।[4] नई कहानी के संबंध में इन सभी निष्पत्तियों के मूल में जो एक बात है वह कहानी के ढांचे में आया गुणात्मक परिवर्तन। इस यह परिवर्तन कुछ इस तरह घटित हुआ कि ऊपरी तौर पर तो बहुत सामान्य सा लगता है लेकिन गंभीर विवेचन के क्रम में पता चलता है कि हिन्दी कहानी की पूरी परंपरा ही इस कहानी आंदोलन में बदलकर रख दी है। कहानी में यह परिवर्तन किस तरह हुआ इसे नामवर जी के हवाले

[4] कहानी: स्वरूप और संवेदना, राजेंद्र यादव, पृष्ठ-67,राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली।

से समझना हो तो ज्यादा आसानी से समझा आजा सकता है। नामवर जी नई कहानी के युगबोध पर बात करते हुये लिखते हैं कि आज से पहले कहानी मनोरंजन के रूप में पढ़ी जाती थी और शिल्प के रूप में विवेचित की जाती थी। कहानी के विवेचन का एक सेट फार्मूला होता था जिसमें कथावस्तु, परिवेश, पात्र एवं चरित्र चित्रण से लेकर उद्देश्य तक की व्याप्ति होती थी। नई कहानी से पहले कहानी के केंद्र में कथावस्तु हुआ करती थी। नामवर जी का मत है कि आज की कहानी उस पुराने ढांचे से नहीं समझी जा सकती है। आज की कहानी को समझने के लिए कहानी की मूल वृत्ति को समझना होगा। नामवर जी के अनुसार यह मूल वृत्ति है कहानी का कहनीपन। उन्होने लिखा है –"कविता में जो स्थान लय का है , कहानी में वही स्थान कहनीपन का है। कविता चाहे जिस हद तक छंदमुक्त हो जाये ,लेकिन वह लयमुक्त नहीं हो सकती। लयमुक्त रचना काव्य होते हुये भी कविता नहीं कहलाएगी। कहनीपन से मुक्त गद्य रचनाओं के बारे में भी यही बात लागू होती है। लय की तरह कहानी कहना मनुष्य की काफी पुरानी कलात्मक वृत्ति है और इसकी रक्षा अपने आप में स्वयं भी एक एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्य है और इतिहास से प्रमाणित होता है कि नीति,लोकव्यवहार, धर्म,राजनीति आदि विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस कला का उपयोग करते हुये भी मनुष्य जाति ने आजतक इसकी रक्षा की है"।[5] इस रक्षा के भाव से ही नई कहानी का युगबोध विकसित हुआ है।

नई कहानी आंदोलन में जिन कथाकारों का नाम प्रमुखता से लिया जाता है उनकी कहानियों के संदर्भ से बात करें तो ज्यादा बेहतर तरीके से हम नई कहानी के युगबोध को समझ सकते हैं। नई कहानी आंदोलन के अंतर्गत जिन कथाकारों का उल्लेख किया जाता है उनमें एक तो कथा-त्रयी की चर्चा होती है जिसके अंतर्गत मोहन राकेश,कमलेश्वर और राजेंद्र यादव का नाम लिया जाता है। दूसरी तरफ नामवर जी निर्मल वर्मा और उनकी कहानी परिंदे को पहला कहानीकार और पहली कहानी के रूप में व्याख्यायित करते हैं। इसके साथ ही हिन्दी आलोचकों की एक तीसरी धारा भी है जो शिवप्रसाद सिंह की कहानी 'नन्हों' को हिन्दी कहानी की पहली कहानी होने का गौरव प्रदान करती है। इन सभी को साथ लेते हुये अगर हम हिन्दी में नई कहानी आंदोलन के मुख्य कथाकारों की सूची बनाना चाहें तो ऊपर लिए गए नामों के साथ ही जिन और नामों की चर्चा बेहद जरूरी हो जाती है उनमें मन्नू भण्डारी,शिवानी, चित्रा मुद्गल,कृष्णा सोबती अमरकांत, काशीनाथ सिंह, दूधनाथ सिंह, रवीद्र कालिया, ममता कालिया जैसे कथाकारों का नाम लिया जा सकता है। इन सभी कथाकारों के लेखन ने हिन्दी कहानी का जो रूप स्थिर किया उसे हम नई कहानी के रूप में व्याख्यायित कर सकते हैं। इन कथाकारों की प्रतिनिधि कहानियों के आधार पर हम अगर नई कहानी के युगबोध की चर्चा करें तो पाएंगे कि हिन्दी कहानी अपने समय

[5] कहानी नई कहानी, नामवर सिंह, पृष्ठ-23, राजकमल प्रकशन समूह, नई दिल्ली।

और समाज की मूलभूत गतिविधियों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुये अपना समय सच रच रही थी। हिन्दी कहानी में पहली बार हुआ कि कहानी ने अपने लेखन के दायरे को और ज्यादा विस्तार दिया। हिन्दी कहानी की परंपरा में अब तक की हिन्दी कहानी में विषय के स्तर पर बहुत कुछ एकरूपता सी दिखाई देती थी। नई कहानी ने उस एकरूपता को तोड़कर हिन्दी कहानी के दायरे को और विस्तार दिया। अब हिन्दी कहानी में वे सारे मूल्य और वे सारी समस्याएँ चित्रित होने लगीं जिनहे चित्रित करने के लिए इससे पहले का यथार्थ और कथाढांचा अपर्याप्त सा लगता था। स्त्री विमर्श और दलित विमर्श के पारंपरिक चित्रण की जगह मन्नू भण्डारी और शिवानी जैसी कथाकारों ने स्त्री की सर्वथा एक नई छवि हिन्दी पाठक के समक्ष प्रस्तुत की। यही सच है की नायिका हो या लाल हवेली की नायिका ये दोनों ही चरित्र हिन्दी कहानी में नयेपन के आग्रह को पुष्ट करते हैं। हिन्दी कहानी यहाँ से एक ऐसा डिपार्चर लेती हुई दिखाई देती है जो उसे कविता और उपन्यास आदि सशक्त मानी जानी वाली विधाओं के समक्ष लाकर खड़ा कर देता है। हिन्दी कहानी का यह बदला हुआ रूप और उसकी यह नई अंतर्वस्तु आज़ादी के बाद के भारतीय सामाजिक-राजनैतिक ढांचे के यथार्थ को व्यक्त करती है और जनता के सवालों से हिन्दी कहानी को सीधे तौर पर जोड़ देती है। हिन्दी कहानी के इस युगबोध की परिचायक कहानीकारों में मन्नू भण्डारी और शिवानी का नाम बेहद महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. कहानी नई कहानी- नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली।
2. कहानी स्वरूप और संवेदना-राजेंद्र यादव, राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली
3. नई कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली।
4. कहानी के साथ साथ , विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली।
5. नई कहानी कथ्य शिल्प और उपलब्धियां, डॉ. अनुपा कृष्णन, जवाहर पुस्तकालय मथुरा।
6. हिन्दी कहानी संवेदना और शिल्प, डॉ. शिवशंकर पाण्डेय, ज्ञान प्रकाशन , कानपुर।
7. मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य: संवेदना और शिल्प, डॉ. भूमिका पटेल, चिंतन प्रकाशन, कानपुर।